26

मानव विकास

* *हाजीरा कुमार*

प्रस्तावना

व्यक्ति में बार-बार दोहराई जाने वाली तथा सैकड़ों तरीकों से प्रतिपादित की जा सकने वाली कुछ बातों पर सावधान रहने की प्रवृत्ति होती है। विकास शब्द प्रायः इतनी बार दोहराया जाता है कि आधुनिक समाज में यह घरेलू शब्द बन गया है। (वर्मा, 1998, 39) यद्यपि यह अच्छी तरह समझ में आता है कि इसकी एक सर्वमान्य परिभाषा नहीं बनाई जा सकती। वर्मा स्वीकार करता है कि विकास की व्यापक एवं सुगम्य परिभाषा बनाने के प्रयास विफल रहे हैं। यह विफलता मुख्यतः हमेशा इसकी विस्तार होती भूमिका, संबंधित विशिष्टताओं की सूक्ष्मता तथा परिवर्तनशील राजनीतिक और व्यवस्थागत वास्तविकताओं के बीच में बहुआयामी जटिलताओं की गति के बारे में व्यापकता की कमी के बने रहने के कारण है। किसी राष्ट्र विशेष में विकास कुछ विकास लक्ष्यों की सहक्रिया है जैसे शिक्षा को बढ़ावा देना, पोषण और स्वास्थ्य में सुधार करना, जनसंख्या को सीमित रखना तथा पर्याप्त स्वतंत्रता और अन्य मूल्यों में गुणवत्ता की पर्याप्त समानता सहित उत्पादकता में वृद्धि करना और भौतिक उन्नति करना। फिर भी विकास की कोई एक सहमत परिभाषा नहीं है' (वर्मा, 1998, 39)। इस स्वीकारोक्ति के बाद हम जी डी पी/ प्रति व्यक्ति आय स्वरूप, पुनर्वितरण, न्याय का स्वरूप, और मानव विकास स्वरूप के रूप में प्रकट होने वाले विकास को समझने का प्रयास कर सकते हैं। ये सभी आयाम परस्पर एक दूसरे को मजबूत करते हैं।

मानव विकास अपेक्षाकृत एक नई संकल्पना है परंतु इसके आवश्यक तत्व प्राचीन हैं। मनुष्य जाति में कुछ वंशानुगत शक्तियाँ और क्षमताएँ हैं। बहुत कम मामलों में ये शक्तियाँ और क्षमताएँ असंगठित, अदृश्य और अनुपयोगी रह जाती

* *प्रो. हाजीरा कुमार, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली*

हैं। आम व्यक्ति के लिए विकास एक अनुकूल वातावरण है जिसमें वे अपनी क्षमताओं में विकास और विस्तार कर सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के हक को स्वीकार करते हुए मानव विकास की नींव सार्वभौमिक हैं। मानव विकास रिपोर्ट, 1984 ठीक ही कहती है, मानव विकास स्वयं के लिए मानव जीवन को महत्व देता है। यह जीवन को केवल इसलिए महत्व नहीं देता कि मनुष्य भौतिक वस्तुएँ पैदा कर सकते हैं यद्यपि यह महत्वपूर्ण कारण हो सकता है न ही यह किसी एक व्यक्ति के जीवन को दूसरे व्यक्ति के जीवन से अधिक महत्व देता है। किसी नवजात शिशु को 'गलत वर्ग', या 'गलत देश' या फिर 'गलत लिंग ' में पैदा होने के कारण कम या दयनीय जीवन जीने की सजा नहीं दी जानी चाहिए। (एच डी आर, 1994, 13) एच डी आर, 1993 कहती है कि मानव विकास मनुष्यों का, मनुष्यों के लिए तथा मनुष्यों के द्वारा विकास है (एच डी आर, 1993, 3)

किसी समाज या देश में मानव विकास करने के लिए वर्तमान से लेकर भावी पीढ़ियों तक प्रत्येक स्तर पर न्याय होना आवश्यक है। सभी प्रकार के प्रयासों को स्वाभाविक रूप से बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है। मानव विकास करने के लिए निरंतर विकास का अर्थ है क्रमिक प्रयास करना। यह धीमा तो हो सकता है लेकिन यह भावी पीढ़ियों के अधिकारों का शोषक नहीं होना चाहिए। इसलिए सही व्याख्या 'स्थाई मानव विकास होनी चाहिए' न कि 'मानव विकास'।

20वीं शताब्दी के अंत में हम सभी जगह यहाँ तक भारत में भी विकास योजना निर्माण के दृष्टिकोण में एक परिवर्तन देख सकते हैं। वस्तुओं और सेवाओं के अधिक उत्पादन तथा इसके फलस्वरूप प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि करने की अपेक्षा इसका लक्ष्य मानव विकास और मानव कल्याण करना था। इसमें शामिल हैं शिक्षा, ज्ञान, स्वास्थ्य, जीवन संभावना और सबसे बढ़कर पर्यावरण सुरक्षा।

हम 'मानव विकास को लोगों के विकल्प और साथ ही स्वास्थ्य स्तर को बढ़ाने की प्रक्रिया के रूप में मान सकते हैं। सैद्धांतिक रूप से ये विकल्प अनंत और अत्यधिक परिवर्तनशील हो सकते हैं। एच डी आर ने तीन सर्वाधिक नाजुक और सार्वजनिक रूप से महत्वपूर्ण तत्व हैं : दीर्घ और स्वस्थ जीवन की ओर ले जाने वाला, ज्ञान प्राप्त करने और शिक्षित होने का विकल्प तथा श्रेष्ठ जीवन स्तर के लिए आवश्यक संसाधनों को प्राप्त करने का विकल्प ' राष्ट्रीय एच आर डी 2001, 9)।

यह सत्य है कि व्यक्तियों के लिए इन विकल्पों का कार्यान्वयन उनके अपने साधनों तथा सार्वजनिक प्रावधानों की प्राप्ति पर निर्भर करता है। विद्यमान साधन और संसाधन सामाजिक रूप से सबके लिए वांछनीय होने चाहिए। सार्वभौमिकवाद उद्देश्य की नीतियाँ अंतर्राष्ट्रीय और अंतर्पीढ़ी की समानता अवसरों में होती है। स्वाभाविक रूप से उपलब्ध भागीदारों की मानसिक और भौतिक क्षमताओं के आधार पर भिन्न-भिन्न होगी। इसे समझने के लिए आप एक 100 मीटर दौड़ की कल्पना कर सकते हैं। इसमें भाग लेने का अवसर सबको मिलता है, लेकिन प्रत्येक प्रथम नहीं आएगा। जीवन के हक की सार्वभौमिकता मूलभूत समानता का विश्वास दिलाती है इसमें सबके लिए अधिकार और मुख्यधारा निहित होती है। यह सभी मानव अधिकारों – आर्थिक, सामाजिक, नागरिक और राजनीतिक अधिकारों की रक्षा करती है। फिर भी मतदान के अधिकार की तरह भोजन के अधिकारों पर विवाद नहीं किया जाता। जीवन के हकों की सार्वभौमिकता पर कोई भेदभाव नहीं वाली पृवृत्ति पर आधारित होती है। यह राष्ट्रीय संप्रभुता का सम्मान करती है लेकिन इस पर मानव अधिकारों की बलि नहीं चढ़ाई जाती।

मानव विकास दर्शन की ऐतिहासिक यात्रा

यह विचार देने वाला अरस्तु को पहला दार्शनिक माना जा सकता है कि कुछ भी प्राप्त करने के लिए धन ही एक मात्र साधन है। कौटिल्य ने भी अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में लिखा है कि समाज कल्याण करना राजा का महत्वपूर्ण कर्त्तव्य होता है। मात्रात्मक अर्थशास्त्र तथा राजनीतिक अर्थव्यवस्था के आद्य संस्थापक जैसे बिलियम पैटी, ग्रेगरी किंग, एड्म स्मिथ, रॉबर्ट माल्थस, कार्ल मार्क्स तथा जॉन स्टुअर्ट मिल ने आर्थिक विकास में बेहतर जीवन शैली और निर्धनों को मुख्य धारा में लाने के बारे में अपनी चिंता अभिव्यक्त की है। यद्यपि उनमें से कुछ के विचार सीमित हैं तो भी जीवन स्तर और जीवन की भौतिक गुणवत्ता के बारे में उनके विचार बहुत महत्वपूर्ण हैं।

इस अवधि में आमदनी को स्वास्थ्य तथा बेहतर जीवन स्तर प्राप्त करने का साधन माना है। निःसंदेह उस समय मानव अधिकार, अवसरों की अधिकता और व्यक्ति की संभावित क्षमताओं के विकास को उस तरह नहीं समझा जाता था जिस तरह आज माना जाता है। यहाँ तक कि प्रतिव्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय का जोश भी नहीं था और इसे स्वयं में लक्ष्य नहीं माना जाता था।

साम्राज्यवाद और औपनिवेशवाद के साथ धन का महत्व अत्यधिक था। 20वीं शताब्दी के अंत तक धन, आमदनी, जी एन पी और जी डी पी के लिए काफी जोश देखा गया। फिर भी, विकासशील देशों के अनुभव की आमदनी में वृद्धि विकास के अन्य आयामों को उज़ागर करने वाली निर्धनता की समस्याओं को हल नहीं करती। संयुक्त राष्ट्र संघ समाज विकास अनुसंधान संस्थान (यू एन आर आई एस डी) के मैक ग्राह्म और उनके सहयोगियों ने विकास के अनेक संकेतों पर कार्य किया है। अनेक सामूहिक विचारों के बाद एम.डी. मोरीज ने एक जीवन की भौतिक गुणवत्ता तालिका (पी क्यू एल आई) विकसित की है। इसलिए विकास के अंतर्गत शिशु मृत्यु दर, जीवन संभावना आयु और शिक्षा दर पर विचार किया गया है। इसमें आर्थिक उन्नति दर की अपेक्षा मानव स्वास्थ्य की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण है।

प्रथम एच आर डी, 1990 एच डी आई की चर्चा में जीवन अवधि, साक्षरता और वास्तविक जी डी पी प्रति व्यक्ति आय को शामिल किया गया है। 1995 में लिंग (महिला) विकास तालिका और महिला सशक्तिकरण के उपाय प्रस्तुत किए गए।

एच डी आई ने आर्थिक उन्नति को क्यों श्रेष्ठ माना? अधिक उत्पादन करने और अधिक लाभ कमाने में गलत क्या है? इस बिंदु पर एक स्वाभाविक प्रश्न उत्पन्न होता है। क्या धन की अधिकता और मानव विकास में कोई विरोध है?

इसका दो तरीके से उत्तर दिया जा सकता है।

1) सभी मानव विकल्पों के लिए धन आवश्यक नहीं होता जैसा कि कहा गया है कि, "कोई समाज लोकतंत्र को वहन करने के लिए धनी होना आवश्यक नहीं हैं। परिवार को प्रत्येक सदस्य के अधिकारों का सम्मान करने के लिए धनी होना आवश्यक नहीं है। किसी देश को पुरुष और महिला को समान समझने के लिए प्रभावशाली होना आवश्यक नहीं है – किसी सभ्यता की धनाढ्यता लोगों के धन से काफी हद तक अलग हो सकती है (एच.डी.आर., 1994, 15)

2) दूसरे राष्ट्रीय धन का यदि समान वितरण नहीं है या योजनाकार की प्राथमिकताएँ गलत हैं तो यह कल्याण नहीं कर सकता। यदि कार्य

संचालन के आरंभ में महसूस करते हैं कि स्वास्थ्य, ज्ञान, राजनीतिक भागीदारी, स्वतंत्रता और लोकतंत्र उनके लिए महत्वपूर्ण नहीं है तो वे संपूर्ण राष्ट्रीय संसाधनों को अविकासकारी कार्यों में खर्च/निवेश कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में राष्ट्रीय धन निर्धन और जरूरतमंद को कोई सहायता नहीं पहुँचाएगा और समृद्धि के बावजूद मानव विकास संतोषजनक नहीं होगा।

आज मानव विकास की संकल्पना का विस्तार होने से हम जानते हैं कि मानव विकास की सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करने के लिए कुछ पूर्व आवश्यकताएँ है।

आर्थिक और समाज विकास

समाज विकास की संकल्पना नवीन है। इससे पूर्व आर्थिक विकास को या विकास को मापने के लिए जी एन पी को एक मात्र मानदंड माना जाता था (पांडे, 1993, 536) लेकिन बाद में स्थिति को दूसरे तरीके से लिया गया और जोर दिया गया कि "समाज विकास आर्थिक विकास का एक भाग तथा उसका एक कारण दोनों हैं" (राव, अहमद द्वारा उद्धृत, 1991, 4)।

प्रो. गोरे सामाजिक विकास को आर्थिक विकास का भाग नहीं मानता। इस क्रम में वह कहता है कि, "सामाजिक विकास की संकल्पना आर्थिक विकास में शामिल तो है लेकिन यह इस अर्थ में भिन्न है कि समाज के समग्र-आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में विकास पर जोर देता है। सामाजिक या कल्याणकारी सेवाओं से अलग कई क्षेत्र हैं जिनमें प्रमुख हैं जनसंख्या नीति से संबंधित क्षेत्र, शहरीकरण से संबंधित नीति, औद्योगिक क्षेत्र और वातावरणीय प्रदूषण, क्षेत्रीय विकास की नीति, आर्थिक उन्नति की नीतियाँ, आमदनी वितरण और भूमि सुधार, प्रशासन नियंत्रण नीतियाँ और योजना निर्माण और कार्यान्वयन में लोगों की भागीदारी" (गोरे, 1973, 10)।

यह समझना आसान है कि अर्थव्यवस्था और सामाजिक व मानव विकास एक दूसरे के विरुद्ध नहीं अपितु वे एक दूसरे के पूरक हैं। फिर भी, उनके दृष्टिकोण और लक्ष्य कुछ भिन्न हैं।

हम आर्थिक विकास, समाज विकास और मानव विकास में आसानी से तुलना कर सकते हैं। आर्थिक विकास है प्रतिव्यक्ति आय, राष्ट्रीय आय, अधिक सकल

घरेलू उत्पादन, अधिक सकल राष्ट्रीय उत्पादन, अधिक विपणन, श्रेष्ठ क्रयशक्ति, अधिक औद्योगीकरण, अधिक निर्यात-आयात आदि। कोपन हेगन सम्मेलन, 1995 के अनुसार सामाजिक विकास सामाजिक बहिष्कार, भेदभाव, निर्धनता और बेरोज़गारी के विरुद्ध संघर्ष है। मानव विकास दोनों के सन्निकट ही परंतु इसका विशेष जोर प्रत्येक व्यक्ति, समूह और समुदाय के जीवन की गुणवत्ता पर रहता है। यह जीवन संभावना, प्रौढ़ शिक्षा का अर्थ है विद्यालय शिक्षा वर्ष, स्वास्थ्य, पोषण और निर्णय और सुंदर जीवन की ओर ले जाने वाले अवसर की चर्चा करता है।

हम देखते हैं कि सभी तीनों एक दूसरे के पूरक हैं लेकिन एक दूसरे के लिए अनिवार्य नहीं हैं।

मानव विकास सूची मापन

मानव विकास सूची में प्रति व्यक्ति (जी एन पी), जीवन संभावना और विद्यालय शिक्षा का प्रतिवर्ष औसत शामिल है। एच डी आई मानव विकास के तीन मूल तत्वों का मिश्रण ये हैं – दीर्घ आयु, ज्ञान और जीवन स्तर। दीर्घ जीवन संभावना के द्वारा, ज्ञान प्रौढ़ शिक्षा (एक तिहाई भार) और विद्यालय शिक्षा का औसत वर्ष (दो तिहाई भार) के द्वारा मापी जाती है। जीवन स्तर की गणना स्थानीय जीवन खर्च और क्रयशक्ति समानता (पी पी पी) के लिए समायोजित प्रति व्यक्ति वास्तविक जी डी पी के आधार पर क्रयशक्ति द्वारा की जाती है।

एच डी आई को मापना कठिन होता है क्योंकि कई वर्षों से विद्यालय शिक्षा जीवन संभावना और क्रय क्षमता का कोई एक सामान्य मानदंड नहीं है। इस समस्या के कारण अन्य प्रणाली का विकास किया गया है। एच डी आई ने प्रत्येक आयाम के न्यूनतम या अधिकतम आयाम निर्धारित कर दिए हैं और तब 0 और 1 के बीच मूल्य के रूप में वर्णित उस संदर्भ में प्रत्येक देश की स्थिति ज्ञात की जाती है। चूँकि प्रौढ़ शिक्षा की न्यूनतम दर 0% तथा अधिकतम दर 100% है अतः किसी देश में साक्षरता दर 75% है तो उसमें साक्षरता (ज्ञान तत्व) दर 0.75 होगी। इसी प्रकार जीवन संभावना न्यूनतम 25 वर्ष तथा अधिकतम 85 वर्ष है। इस लिए किसी देश में दीर्घायु तत्व 55 वर्ष है तो वहाँ जीवन संभावना 0.55 होगी। इसी प्रकार आमदनी के लिए अधिकतम क्रयशक्ति समानता 200 (पी पी पी) है और

अधिकतम, 40,000 (पी पी पी) है। प्रगतिशील उच्चतर छूट दर का प्रयोग करते हुए औसत विश्व आय से अधिक आय का समायोजन किया जाता है। तब तीन आयामों के अंकों के हिसाब का एक समग्र सूची में औसत निकाला जाता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस तरह की गणना अत्यधिक औसत आँकड़ों पर निर्भर करती है लेकिन हो सकता है यह प्रत्येक भाग का प्रतिनिधित्व न करे। तो भी यह प्रणाली एक सामान्य तस्वीर प्रस्तुत करती है और अधिक प्रतिनिधि तस्वीर करने के लिए किसी देश में विभिन्न समूहों की एच डी आई की क्षेत्र, जाति, लिंग या मानव जाति समूहों के आधार पर गणना की जा सकती है।

जहाँ तक एच.डी.आई. की उपयोगिता का संबंध है यह किसी देश की सापेक्ष सामाजिक, आर्थिक प्रगति मापने के लिए जी एन पी का एक विकल्प है। यह दो देशों के बीच तुलनाओं के मानदंड भी प्रदान करती है।

मानव विकास और मानव निर्धनता सूची

मानव विकास लोगों के विकल्प जैसे स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन, शिक्षित होने का अधिकार तथा एक श्रेष्ठ जीवन स्तर जीने की आजादी को व्यापक बनाता है। अतिरिक्त विकल्प है राजनीतिक आजादी, मानव अधिकार सुरक्षा एवं रक्षा। यदि इन सभी अधिकारों को रद्द कर दिया जाए तो स्वाभाविक रूप से यह मानव निर्धनता होगी। यदि लोगों के पास सुखी, स्वस्थ और दीर्घ जीवन जीने का विकल्प नहीं है, अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं है, श्रेष्ठ जीवन जीने की उपयुक्त आवश्यकता को पूरा करने का अधिकार नहीं है, समाज में कोई स्वतंत्रता, हैसियत, सम्मान या स्वीकृति नहीं है तो वे मानव निर्धनता का शिकार है। निर्धनता के अनेक रूप हैं। आमदनी या उपभोग आधारित निर्धनता भी मानव पीड़ा है अतः आखिकार यह भी मानव निर्धनता ही है। फिर भी, मानव निर्धनता जिसका अर्थ है विकल्पों और अवसरों की निर्धनता है, का भी व्यापक प्रसार है।

निर्धनता के तीन परिप्रेक्ष्य

1) **आमदनी परिप्रेक्ष्य :** यदि कोई व्यक्ति अपनी मूल आवश्यकताएँ पूरी नहीं कर पाता और वह राष्ट्रीय स्तर के अनुसार गरीबी रेखा से नीचे आता है तो वह वास्तव में निर्धन है। उसे एक डालर से कम या एक दिन की आमदनी से कम रखने वाले सार्वभौमिक मानदंड के अनुसार भी निर्धन माना

जाता है। कभी-कभी निर्धनता को भोजन, पोषण, कलौरी मात्रा या उपभोग स्तर की न्यूनतता के अर्थों में भी मापा जाता है।

2) **मूलभूत आवश्यकता परिप्रेक्ष्य :** इस प्रकार की निर्धनता में भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य सुविधाओं, शिक्षा अवसरों और लाभदायक रोज़गार के अभावों को शामिल किया जाता है। यह प्रायः अधिकांश जनसंख्या को संसाधन विहीन रखने वाले राष्ट्रीय संसाधनों के असमान वितरण का परिणाम होता है।

3) **क्षमता परिप्रेक्ष्य :** निर्धनता का यह अभिप्राय समाज में उपयोगी और वांछित व्यक्ति के रूप में सार्थक जीवन जीने के लिए अवसरों के अभाव का द्योतक है। इसका अभिप्राय है कि व्यक्ति के पास राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेना कोई विकल्प नहीं है, समाज में उसकी कोई स्थिति या भूमिका नहीं है, या अपने व्यक्तित्व विकास और आत्म पूर्ति के लिए सामाजिक संसाधनों के प्रयोग करने का कोई अधिकार नहीं है। इन तीनों परिप्रेक्ष्यों का मिश्रण मानव निर्धनता है।

एच डी आर, 1996 ने सिफारिश की है कि विकास व्यक्ति केंद्रित समान वितरण वाला और पर्यावरण तथा सामाजिक रूप से स्थाई होना चाहिए यह इस बात पर भी जोर देता है कि मानव विकास एक उद्देश्य है तथा आर्थिक उन्नति एक साधन तथा उन्नति समग्र विकास लाने वाली होनी चाहिए। यू.एन.डी.पी. ने एच.डी.आर., 1996 में क्षमता निर्धनता मान (सी पी एम) भी तैयार किए हैं जो इस प्रकार हैं :

1) 5 वर्ष से कम आयु के कम भार और कुपोषण के शिकार बच्चों की संख्या जिनमें अच्छी तरह खाने और स्वस्थ होने की क्षमता है।

2) प्रशिक्षित स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं द्वारा ऐसी माताओं का समाप्त किए गए प्रसवों की संख्या जिनमें मातृत्व मृत्यु के भय रहित स्वस्थ तरीके से पुनरुत्पादन की क्षमता है।

3) 15 वर्ष से अधिक आयु की महिलाओं में असाक्षरता दर। इनमें शिक्षित होने की क्षमता है।

भारत में उच्च सी पी एम प्रतिशत है।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्र आशीष बोस ने जीवन स्तर की गुणवत्ता तथा संख्या ज्ञात करने के लिए एक घरेलू कंगाली सूची बनाने का प्रयास किया है। इस सूची के मानदंड इस प्रकार हैं:

1) पक्के घर रहित परिवार
2) स्वच्छ पेयजल रहित परिवार
3) उपयुक्त शौचालय रहित परिवार
4) बिजली की सुविधा रहित परिवार
5) खाना पकाने के लिए उचित ईंधन रहित परिवार।

इस सूची के अनुसार उड़ीसा सर्वाधिक कंगाल राज्य तथा चंडीगढ़ सर्वाधिक विकसित पाया गया।

यह एक दम स्पष्ट है कि निर्धनता के अनेक भुजाओं वाली स्थिति है, जो मनुष्यों को अपने घेरे में लेकर उनका खून चुसती है। निःसंदेह अधिकतर देशों में निर्धनता सर्वाधिक गंभीर समस्या है। भारत में आमदनी निर्धनता, मानव निर्धनता, क्षमता निर्धनता और घरेलू निर्धनता से सभी जगह असंख्य पीड़ित लोग हैं। बहुधा वही वर्ग सभी प्रकार की निर्धनताओं से पीड़ित होते हैं।नहीं

मानव विकास और महिलाओं के मुद्दे

आँकड़े बताते हैं कि कुछ वर्षों में मानव विकास में गति आई है लेकिन विकास के फल में महिलाओं का समान हिस्सा नहीं मिल रहा है। महिला विकास के क्षेत्र में प्रयास काफी हद तक निष्फल रहे हैं। एच डी आर, 1997 कहती है पुरुषों से 60% अधिक महिलाएँ अनपढ़ हैं। प्राथमिक शिक्षा में पंजीकृत महिलाओं की संख्या पुरुषों की संख्या से 13% कम है। महिलाओं की मज़दूरी पुरुषों की मज़दूरी का तीन चौथाई होती है।

इसके बारे में प्रामाणिक होने के लिए महिला संबंधित विकास सूची (जी डी आई) और महिला सशक्तिकरण मान (जी ई एम) आरंभ किए गए। जी.डी.आई. की

गणना एच डी आई के मानदंडों के अनुरूप ही की जाती है। जी ई एम प्रमुख क्षेत्रों जैसे आर्थिक और राजनीतिक भागीदारी तथा प्रबंधकीय और पर्यवेक्षणीय पदों पर हिस्सेदारी में असमानता का खुलासा करती है। इस प्रकार यह जी डी आई से भिन्न है। जी डी आई की गणना आँखें खोलनी वाली है क्योंकि कोई भी समाज महिलाओं को समान नहीं समझता। एच पी आई और जी डी आई गहन रूप से संबंधित है। एच पी आई में निम्नतम देश जी डी आई में भी निम्नतम है जैसे सीरिया, लेयोन, नाइजर और माले। दूसरी तरफ आमदनी निर्भरता और जी डी आई गहन रूप से संबंधिता नहीं है। इसका अर्थ है समृद्धि और महिलाओं की स्थिति का संबंधित होना अनिवार्य नहीं है।

भूमंडलीकरण और मानव विकास

भूमंडलीकरण कुल मिला कर एक आर्थिक विचारधारा है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक नीतियाँ 1970 और 1980 के दशकों में बाज़ार के अनुकूल लाभ आधारित आर्थिक व्यवस्था की तरफ तेज़ी से परिवर्तित हुई है। यह एक प्रकार की समाजवादी अर्थव्यवस्था की प्रतिक्रिया थी और निर्धनता के अनुकूल आर्थिक झुकाव था। ये लहर क्षेत्रीय नहीं अपितु सार्वभौमिक थी।

सार्वभौमिक परिदृश्य दूरियाँ, समय को कम करते हुए और व्यवस्थाओं को छोड़ते हुए परिवर्तित हो रही है (एच.डी.आर., 1994, 29) लेकिन हम देखते हैं कि निर्धनतम देश अभी भी हाशिये पर हैं और निर्धनतम ही हैं। लेकिन धनी देश कल्पनातीत वास्तविक उच्चाइयाँ छू रहे हैं। स्थिति कुछ इस प्रकार है :

1) तीन सर्वाधिक धनी व्यक्तियों की संपत्तियाँ सभी न्यूनतम विकसित देशों के मिश्रित सकल राष्ट्रीय उत्पादन (जी.एन.पी.) से भी अधिक है।

2) 200 सर्वाधिक धनी लोगों की संपत्तियाँ 41% विश्व जनसंख्या की संयुक्त आमदनी से अधिक है।

3) 200 सर्वाधिक धनी लोगों का वार्षिक 1% योगदान सार्वभौमिक रूप से सभी लोगों को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने में सहायता प्रदान कर सकता है (7-8 हजार करोड़ लोग) (एच डी आर, 1999, 38)

पूर्व के रूस और पूर्वी यूरोप में असमानता बढ़ती जा रही है। सुदूर पूर्व में बेरोज़गारी और दिवालिएपन की समस्याओं का सामना किया है। सीमाएँ समाप्त होने से सार्वभौमिक अपराधों, साइबर अपराधों, सीमापार आतंकवाद और व्यसनवाद को आधार मिला है। एच आई वी/एड्स के प्रसार ने सीमाएँ लांघ दी हैं। संस्कृति का प्रवाह मात्र एक ही दिशा अर्थात् धनी देशों से निर्धन देशों की तरफ है। घटते समय और दूरियाँ केवल ओ ई डी सी देशों के संदर्भ में ही सार्थक है जिनमें विश्व की 19% आबादी है लेकिन वहाँ 91% इंटरनेट के प्रयोगकर्ता रहते हैं। दक्षिण एशिया में गहन आबादी होने के बावजूद बहुत कम लोग इसका प्रयोग करते हैं। (23.5% आबादी है और 1998 में इंटरनेट का प्रयोग करने वाले 0.04% तथा 2002 में 0.4% थे)

कुछ तर्क दिए जाते हैं कि भूमंडलीकरण कोई नया नहीं है और एक शताब्दी पूर्व विश्व अधिक संघटित था। जी डी पी के अनुपात में व्यापार और निवेश तुलनात्मक थे और सीमाएँ खोलने से अनेक लोग विदेशों में प्रवास करने लगे। इस समय नया क्या है? इसका उत्तर है :

नया बाज़ार

- सेवाओं, बैंकिंग, बीमा, परिवहन आदि में विश्व बाज़ार में वृद्धि
- नए वित्तीय बाज़ार - मुक्त, 24 घंटे कार्यरत, सार्वभौमिक रूप से जुड़े हुए, कृत्रिम. नए उपकरणों के साथ समय मील की दूरी से कार्य करने वाले
- विश्वास भंग कानूनों की समाप्ति और मिश्रण तथा अधिग्रहण की बहुलता
- सार्वभौमिक ब्रांडों के साथ सार्वभौमिक उपभोक्ता बाज़ार

नए कार्य करने वाले

- अपने उत्पादन और विपणन को संघटित करने वाले तथा विश्व उत्पादन को नियंत्रित करने वाले बहुराष्ट्रीय निगम
- विश्व व्यापार संगठन – नियमों/कानूनों के साथ राष्ट्रीय सरकारी अनुपालन को लागू करने के अधिकार वाले बहुस्तरीय संगठन

- विपणन में अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय प्रणाली
- गैर-सरकारी संगठनों के अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क में उछाल
- क्षेत्रीय गुटों की प्रचुरता तथा महत्व प्राप्त करना – यूरोपिय यूनियन, दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों की एसोसिएशन, मर्कोसुर, उत्तर अमेरिका, मुक्त व्यापार एसोसिएशन, दक्षिणी अफ्रीकी विकास समुदाय तथा अन्य अनेक संगठन।
- अधिक नीति समन्वय समूह, जी – 7, जी – 10, जी – 22, जी – 77, ओ सी इ डी, (एच डी आर, 1999, 30)।

मानव अधिकार तथा मानव विकास

ऐसे विश्व की कल्पना करना अपेक्षाकृत असंभव है जो मानव अधिकारों की उपेक्षा कर मानव विकास को अपनाता हो। "मानव अधिकार और मानव विकास का एक ही दृष्टिकोण है और प्रत्येक स्थान पर सभी लोगों की स्वतंत्रता, स्वास्थ्य, और सम्मान को सुरक्षित करने का उनका एक ही उद्देश्य है।" (एच डी आर 2000, 1) सुरक्षा, पक्षपात और पूर्वाग्रहों से मुक्ति, अभावों से मुक्ति, असुरक्षा के भय से मुक्ति, हिंसा, अत्याचार, छद्म युद्ध और पुलिस कार्रवाई के भय से मुक्ति तथा अन्याय से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए दोनों मिल कर कार्य करते हैं। राजनीति में भागीदारी की स्वतंत्रता, तथा शोषण रहित सम्मानजनक कार्य प्राप्त करने की स्वतंत्रता भी आवश्यक है। यह एक दम स्पष्ट है कि "मानव की स्वतंत्रता मानव अधिकारों और मानव विकास का एक सामान्य उद्देश्य और प्रेरणा है। मानवाधिकार और मानव विकास आंदोलन की विशिष्ट परंपराएँ और नीतियाँ रही हैं। व्यापक गठबंधन में संबद्ध प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के लिए ऊर्जा और शक्ति प्रदान कर सकता है।" (एच डी आर, 2000, 2)

मानव विकास राजनीतिक स्वतंत्रताओं और लोकतांत्रिक आजादी के महत्व की उपेक्षा नहीं कर सकता। मानवाधिकार दृष्टिकोण मानव विकास की समीक्षा के लिए एक अतिरिक्त बहुत उपयोगी परिप्रेक्ष्य प्रदान कर सकता है। मानव विकास लोगों को मानवाधिकार और सामाजिक राजनीतिक स्वतंत्रताओं का प्रयोग करने में सक्षम बनाता है।

हमें याद रखना चाहिए कि मानवाधिकारों का एक संदर्भानुगत अर्थ भी होता है। तीसरी दुनिया के देशों में जनता को न तो मानवाधिकारों की समझ है और न ही अधिकारी उन्हें स्वीकार करते हैं। कुछ देशों में मानवाधिकार आयोग अधिक अधिकारों के एक गैर-सरकारी संगठन की तरह है। फिर भी भारत में एच आर सी की एक सरकारी स्थिति है तथा इसे राष्ट्रीय महिला आयोग और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग (एन सी डब्ल्यू तथा एन सी एम) के द्वारा समर्थन दिया जाता है।

विकासशील देशों में चीजों में बड़ा धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। निःसंदेह मानव विकास धीरे-धीरे समझा और स्वीकार किया जा रहा है। लेकिन मानवाधिकार तथा सिविल स्वतंत्रताएँ प्रायः विकासशील देशों में जल रहित पौधों की तरह तैर रही हैं।

भारत में मानव विकास

जब भारतीय अनुभव की चर्चा करते हैं तो पाते हैं कि भारत सकारात्मक दिशा में बढ़ रहा है। इसकी गति धीमी है और यह क्षेत्रीय असंतुलनों से भी घिरा हुआ है। फिर साथ ही भिन्नताओं की अधिकता के कारण प्रतिनिधि औसत प्राप्त करना भी कठिन है। इन सबके बावजूद, भारत ने 21वीं शताब्दी में मध्य स्तर की स्थिति प्राप्त कर ली है। जनसंख्या विस्फोट तथा अन्य दबावकारी समस्याएँ बाधा उत्पन्न करती हैं तो भी मानव विकास के आँकड़े उत्साहजनक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। हाल ही में भारत निम्न विकास सूची से हटकर मध्यम मानव विकास की सूची में आ गया है।

फिर भी, भारत में अनेक समस्याएँ हैं हमारी प्राचीन और आज भी अत्यधिक कठिन समस्याएँ हैं जनसंख्या, निर्धनता और अशिक्षा। इसके अतिरिक्त अन्य वैसी ही महत्वपूर्ण समस्याएँ हैं भ्रष्टाचार, रूढ़िवाद, अलगाववादी प्रवृत्तियाँ, जंगल कटाव, आतंकवाद, मानव हिंसा, मौलिकतावाद, दोषपूर्ण शहरीकरण प्रदूषण आदि। अनेक समस्याओं के बीच भारत सामाजिक क्षेत्र में धीरे-धीरे उन्नति कर रहा है तथा उपर्युक्त सभी समस्याओं से संघर्ष कर रहा है। हमें निम्नलिखित में इसका प्रमाण मिलता है :

इन उत्साहवर्धक आँकड़ों के बावजूद किसी को भी यह नहीं भूलना चाहिए कि निर्धनतम व्यक्ति अभी भी बुरी तरह पीड़ित है, कुछ क्षेत्रों में भूख से मौतें हो रही हैं, किसान आत्महत्याएँ कर रहे हैं और 0-6 वर्ष की बालिकाओं की संख्या में कमी आ रही है तथा महिलाओं की स्थिति विरोधी तस्वीरें दर्शा रही हैं।

यद्यपि मानव विकास सूची में हमने अच्छा प्रदर्शन किया है तो भी भारत की स्थिति एच डी आर 2003 में सभी 173 देशों में 124 से गिर कर 127 हो गई है। इसकी जीवन संभावना जन्म के समय 63.3, प्रौढ़ साक्षरता दर 58%, प्रति व्यक्ति जी डी पी 2840 (पी पी पी डालर 2001) तथा एच डी आई मूल्य 0.590 है। एच डी आर 2003 में स्पष्ट कहा गया है कि "पिछले दशक में चीन और भारत ने आश्चर्यजनक आर्थिक उन्नति की है। उनकी सफलता औसत स्वास्थ्य को सुधारने में है जो काफी बड़ी आबादी के व्यापक सुधारों में निहित है" (एच डी आर 2003, 73) चीन और भारत में अनेक समानताएँ हैं लेकिन राजनीतिक प्रणाली भिन्न है। इसलिए उनकी उपलब्धियाँ भी भिन्न-भिन्न है। विश्व रैंक रिपोर्ट 2003 उनके अनुसार 1 डालर से कम प्रतिदिन प्राप्त करने वाले लोगों की संख्या चीन में 1990 में 33% से घट कर 2000 में 15% रह गई जबकि भारत में 1993-94 में 42% से घटकर 2001 में 35% रह गई। चीन में साक्षरता 84%, शिशु मृत्यु दर 32 प्रति एक हजार, जीवित जन्म और यू 5 एम आर (5 वर्ष से कम आयु की मृत्यु दर) 40 प्रति एक हजार जीवित जन्म है।

यहाँ एक चीज उल्लेखनीय है कि जनसंख्या समस्या के कारण भारत में मानव विकास खर्च एक वास्तविक समस्या है। इसके अतिरिक्त यहाँ कृषि, ग्राम विकास, शिक्षा, जल आपूर्ति, आवास, सफाई, आर्थिक सहायता, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, और एस सी/एस टी तथा ओ बी सी कल्याण पर भी ध्यान देना पड़ता है। केंद्र सरकारों का कुल खर्च (टी सी जी ई) में मानव विकास खर्च (एच डी ई) का हिस्सा 15% से 18% है।

1990-91 में टी सी जी ई का 15% मानव विकास के लिए आवंटित किया गया लेकिन जब से एच डी ई ने सकारात्मक प्रवृत्तियाँ दिखाई है। 1997-98 में यह 18% था। एच डी ई की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि इसमें ध्यान केंद्रित करने का अभाव है और प्रवृत्तियाँ भी असाधारण हैं।

मानव विकास खर्च को समझने का एक और तरीका है। एच डी ई और जी डी पी अनुपात की गणना करनी चाहिए। यह बड़ा अजीब है कि 1985-86 में एच

डी ई 3.1% और 1997-98 में यह 2.9% था (तिवारी एवं पांडे, 98, 117)। निःसंदेह इसकी कमी स्पष्ट है तो इस इसकी उपलब्धियाँ उल्लेखनीय नहीं हैं।

वर्ष 2015 के लिए सहस्त्राब्दिक घोषणा लक्ष्य और मानव विकास

वर्ष 2000 में कुछ लक्ष्यों को 2015 तक प्राप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र सहस्त्राब्दिक घोषणा अपनाई गई। मार्च 2002 में मोंटरे सर्वसम्मति ने और सितम्बर में जोहंसबर्ग घोषणा ने स्थाई विकास और कार्यान्वयन योजना पर विकसित, विकासशील और अविकसित देशों के बीच सर्वाधिक ठोस भागीदारी का मंच प्रदान किया। इसका विवरण निम्नलिखित है :

मानव विकास का तुलनपत्र-लक्ष्य, उपलब्धियाँ और अधूरे कार्य

इस तुलन-पत्र से उत्पन्न स्थिति की जब हम समीक्षा करते हैं तो एक टेढ़ी-मेढ़ी छवि उभरती है। हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि चीज़ों में सुधार तो हो रहा है लेकिन निर्धनतम वर्गों के लिए नहीं जो अभी भी पीड़ित है और कुछ मामलों में तो पहले से अधिक प्रीड़ित हैं। फिर भी हम देखते हैं कि 2002 की एच डी आर में समुचे विश्व में स्थिति में कुछ सुधार हुआ है लेकिन अभी-भी कुछ कमियाँ हैं।

मानव विकास लक्ष्य सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों से कैसे संबंधित हैं

मानव विकास के लिए महत्वपूर्ण क्षमताएँ	तदनुरूप सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य
दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन जीना	लक्ष्य 4.5; बाल मृत्यु दर कम करना, मातृत्व स्वास्थ्य में सुधार करना और बड़ी बीमारियों से संघर्ष करना।
शिक्षित होना	लक्ष्य 2 व 3; सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करना, लिंग समानता बढ़ाना (विशेषतः शिक्षा में) और महिलाओं को सशक्त बनाना।
श्रेष्ठ जीवन स्तर बनाना	लक्ष्य नं. 1 : निर्धनता और भुखमरी को कम करना।
राजनीतिक और नागरिक स्वतंत्रता प्राप्त करना	लक्ष्य नहीं अपितु महत्वपूर्ण सार्वभौमिक उद्देश्य, सहस्त्राब्दि घोषणा में शामिल किया गया।

मानव विकास के लिए अनिवार्य शर्त	तदनुरूप सहस्राब्दि विकास लक्ष्य
1. पर्यावरण बनाए रखना	1. लक्ष्य 7 : पर्यावरण सुरक्षा सुनिश्चित करना
2. समानता विशेषतः लिंगीय समानता	2. लक्ष्य 3 : लिंगीय समानता को बढावा देना तथा महिलाओं को सशक्त बनाना
3. सार्वभौमिक अर्थव्यवस्था को अच्छी बनाने में सक्षम बनाना	3. धनी और निर्धन देशों के बीच साझेदारी को मजबूत बनाना

(एच.डी.आर., 2003, 20)

ये कोपनहेगन सम्मेलन के उद्देश्य हैं। पाँच वर्ष बाद सहस्राब्दि लक्ष्य भी वही थे। निम्नलिखित को करने की योजना थी :

- लक्ष्य तिथि तक संपूर्ण निर्धनता उन्मूलन करना
- मूलभूत नीति लक्ष्य के रूप में संपूर्ण रोज़गार को समर्थन देना
- सभी मानवाधिकारों को व्यापक बनाने और संरक्षण देने के आधार पर सामाजिक संघटन को बढ़ावा देना
- पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता और बराबरी प्राप्त करना
- अफ्रीका और न्यूनतम विकसित देशों के विकास को तीव्र करना
- सुनिश्चित करना कि संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों में सामाजिक विकास लक्ष्यों को भी शामिल करना
- सामाजिक विकास के संसाधन आबंटन बढ़ाना
- सामाजिक विकास करने के लिए लोगों को सक्षम बनाने वाला आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और कानूनी वातावरण बनाना

- सार्वभौमिक रूप से उचित शिक्षा और प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल उपलब्ध कराना; और

- संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से सामाजिक विकास के लिए सहयोग को मजबूत करना।

इस मोड़ पर आइए हम पता लगाएँ कि अब तक स्वयं को सुधारने के लिए पिछड़े देशों द्वारा और जरूरतमंद देशों की सहायता के लिए विकसित देशों द्वारा क्या कार्य किए गए हैं। कम मानव विकास वाले देशों ने सार्वभौमिक सहायता का उपयोग करने के लिए कार्य करना आरंभ कर दिया है। दो दर्जन से अधिक देशों ने निर्धनता उन्मूलन कार्य नीति दस्तावेज़ (पॉवर्टी रिडक्शन स्ट्रेटजी पेपर्स (पी.आर.एस.पी.एस.) तैयार किए हैं जो इन नीतियों में धन लगाने, इन्हें लागू करने तथा इनकी निगरानी करने का ढाँचा प्रदान करते हैं। ये विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा समर्थित संयुक्त विचार पर आधारित है। मध्यम स्तर का मानव विकास वाले देश घरेलू असमानताओं को समाप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। अनेक मध्यम आय वाले देशों ने हाल ही में विकास सलाह और यहाँ तक कि आर्थिक सहायता प्रदान करना आरंभ किया है जो दिलासा देने वाली प्रवृत्ति है और इसको भरपूर प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। (एच.डी.आर. 2003, 21) औपचारिक विकास सहायता (ओ.डी.ए.) के लिए दान देने वाले देश सिद्धांततः विभिन्न देशों के पी आर एस पी एस के साथ अपने कार्यक्रम समन्वित करने के लिए सहमत हो गए हैं। नागरिक समाज, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन विकास कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विकसित देशों से सहायता लेना कोई भिक्षा दान नहीं है अपितु यह विकासशील और अल्प विकसित देशों का अधिकार है और सहस्राब्दि लक्ष्य प्राप्त करने के लिए यह एक नीति है।

इस विश्लेषण के बाद हमारे पास मिश्रित प्रतिक्रियाएँ आई हैं क्योंकि कुछ देशों ने बाल मृत्यु दर, शिक्षा और जीवन संभावना के क्षेत्र में स्पष्ट उलटाव के संकेत प्रकट किए हैं। सब साहारा क्षेत्र में 1990 में बाल मृत्यु दर ओ ई सी डी देशों के मुकाबले 18 गुणा अधिक थी जो 2001 में बढ़कर 25 गुणा हो गई। फिर भी औसत जीवन संभावना में वृद्धि हुई है, निर्धनता कम हुई है, प्राथमिक शिक्षा

पंजीकरण संख्या में वृद्धि हुई है तथा सुरक्षित पेयजल प्राप्त करने वालों की संख्या दोगुनी हो गई है।

हमें कहना चाहिए कि अब विकास की संकल्पना पहले से अधिक संपूर्ण और अधिक ध्यान आकर्षित करने वाली हो गई है। हम असफलताएँ और चूक स्वीकार कर सकते हैं और सबके लिए और विशेषतः भूतकाल में पीछे रहने वालों का समुचित कल्याण करते हुए व्यापक परिप्रेक्ष्य के लिए कार्य करते हैं। राज्य व्यवस्था, समाज, अर्थव्यवस्था सभी उचित रूप से समान रूप से विकास के दृष्टिकोण का सार बनाते हैं। (सिंह, आइ.एन. श्रीवास्तव, 1998, 69)

हमें यह समझना चाहिए कि यद्यपि भारत की स्थिति एच.डी.आई. में 124वीं स्थिति से गिर कर 127वीं हो गई है तो भी इसका निष्पादन पहले से कुछ अच्छा है। यह इसलिए नीचे आ गया क्योंकि अन्य विकासशील देश क्रम में ऊपर हो गए हैं।

हाल ही में कई नई सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। सार्वभौमिक अर्थव्यवस्था से पूर्वी एशिया को बहुत लाभ हुआ है। लेकिन एशिया के कुछ देश जैसे अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका पीछे छूट गए हैं। वे संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम का सामना नहीं कर सके और उन्होंने अवनति के लक्षण दर्शाए।

संरचनात्मक समायोजन निर्धनता को दासता के साथ जोड़ उत्पन्न करते हैं। इसलिए जीवन शैली निर्धारित करने के विकल्प बहुत सीमित रह जाते हैं। किसी को यह नहीं भूलना चाहिए कि मानव विकास का लक्ष्य लोगों के लिए विकल्पों में वृद्धि करना है। इसके लिए हमें प्रत्येक क्षेत्र में अधिकतम स्वतंत्रता रखनी होगी जैसे सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक। चार्ल्स हमाना ने स्वतंत्रता को मापने के 40 संकेतों का प्रयोग किया है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण संकेत इस प्रकार हैं :

1) **अधिकार** – अपने देश में कहीं भी यात्रा करना, सूचना प्राप्त करना तथा मानवाधिकार उल्लंघनों को रोकने का अधिकार।

2) **स्वतंत्रता** – बलात बाल श्रम, हिरासत में मृत्यु और हवालात, वैयक्तिक स्वतंत्रता में राज्य का हस्तक्षेप, नागरिकों पर राज्य की विचारधारा थोपने से स्वतंत्रता।

3) **स्वतंत्रता** – बहुदलीय चुनाव, महिलाओं की समानता तथा सशक्तिकरण, प्रेस और समाचार-पत्र, स्वतंत्र न्यायालय, स्वतंत्र ट्रेड यूनियनें बनाने की स्वतंत्रता।

4) **कानूनी अधिकार** – राष्ट्रीयता, खुला मुकद्मा, मुफ्त कानूनी सहायता प्राप्त करने का अधिकार।

5) **व्यक्तिगत अधिकार** – किसी भी राष्ट्रीयता या धर्म के व्यक्ति के साथ विवाह करने का अधिकार (एच डी आर, 1991, 20)

इन संकेतों के आधार पर मानव स्वतंत्रता सूची तैयार की गई। मानव स्वतंत्रता में तो विस्तार हो रहा है लेकिन नए आर्थिक परिवर्तनों ने असंख्य लोगों को सुभेद्य, संसाधन विहीन और निर्वत बना दिया। ऐसी स्थिति में औद्योगिक देशों द्वारा सहायता का हाथ बढ़ाना दिखावा लगता है। भूमंडलीकरण की लहर में मानव स्वतंत्रता भी कुछ हद तक उपेक्षित हो गई है।

भूमंडलीकरण ने व्यापक जन आंदोलन भी उत्पन्न किए हैं जिससे सांस्कृतिक अनुकूलन और स्वीकृति का विस्थापन और अन्य समस्याएँ उत्पन्न हो गई है। काफी आश्चर्यजनक है कि भूमंडलीकरण ने मानवीय हिंसा और सशस्त्र संघर्ष बढ़ाने में सहायता की है। यह दूरिया कम होने तथा आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष शामिल होने से असंतोष बढ़ गया है शहरीकरण, बस्ती उत्पन्न होना, निर्धनता, बेरोज़गारी मानसिक दबाव और परिवार विघटन जैसी कुछ समस्याओं ने मानव विकास प्रक्रिया को बाधित किया है। निःसंदेह ये समस्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं तो भी मानव विकास के क्षितिज भी बाधाओं के बावजूद विस्तृत हो रहे हैं क्योंकि सकारात्मक ताकतें भी अपनी भूमिका निभा रही हैं।

सारांश

मानव विकास की संकल्पना पीछे आर्थिक प्रगति उन्मुख उन्नति की प्रतिक्रिया रही है। 1970 के दशक में सामाजिक विचारकों ने पुनर्वितरण न्याय पर विचार करना आरंभ किया क्योंकि आर्थिक प्रगति और सामाजिक विकास तथा मानव विकास की विशेषताओं के उद्देश्य अत्यधिक स्पष्ट हो रहे थे। 1990 में यू एन डी पी मानव विकास रिपोर्ट के साथ वास्तविक अर्थ में मानव विकास के केंद्र बिंदु

के रूप में स्थापित किया गया जिसके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ कार्य कर रही थीं। इस पृष्ठभूमि में हमने प्रतिकूल चर्चा आरंभ की थी। सर्वप्रथम विचारधारा को इसकी सभी संकल्पनाओं के साथ प्रस्तुत किया गया। यह भी बताया गया है कि पीछे किस प्रकार इस संकल्पना का विकास हुआ है।

इसके बाद हमने मानव विकास सूची की गणना के बारे में अध्ययन किया। इसके घटक और उनकी तर्क संगतता के बारे में गहन चर्चा की गई है। इसके साथ मानव निर्धनता सूची का विश्लेषण किया गया और उसकी व्याख्या की गई। मानव विकास और शांति संबंधों को भी उजागर किया गया तथा 20:20 समझौते का भी गहन वर्णन किया गया। जी डी आई और जी ई एम गणना पद्धतियों का उल्लेख करते हुए मानव विकास और लिंग (महिला) विषयों की चर्चा की गई। मानव विकास के साथ उनके संबंधों की भी चर्चा की गई है।

भूमंडलीकरण और मानव विकास की उनके एक दूसरे के साथ संबंध होने का वर्णन किया गया है। भूमंडलीकरण के लाभ और हानियों के बारे में एक अंतःदृष्टि भी प्रदान की गई है। मानवाधिकार और मानव विकास एक दूसरे के पूरक हैं। उनके गहन संबंधों की चर्चा की गई है। मानव विकास के कारणों को प्रोत्साहन देने में वर्ष 2015 के लिए सहस्राब्दि घोषणा लक्ष्यों के महत्वों को छात्रों के लिए सरल बनाकर प्रस्तुत किया गया है। अंत में मानव विकास से संबंधित विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों के समग्र मूल्यांकन को प्रस्तुत किया गया है।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

गोरे, एम एस, सम आस्पेक्ट्स ऑफ सोशल डेवलपमेंट, अगस्त, 1973, आई आई एस ई डिपार्टमेंट ऑफ सोशल वर्क एंड यूनिवर्सिटी ऑफ हांगकांग, पृष्ठ-10

एच डी आर, 1991, यू एन डी पी, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

एच डी आर, 1994, यू एन डी पी, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

एच डी आर, 1997, यू एन डी पी, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

एच डी आर, 1999, यू एन डी पी, नई दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

एच डी आर, 2000, यू एन डी पी, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

एच डी आर, 2001, यू एन डी पी, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

एच डी आर, 2002, यू एन डी पी, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

एच डी आर, 2003, यू एन डी पी, नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

रमा एस. पांडे, डेवलपमेंट पीस एंड ह्युमन राइट्स इन साऊथ एशिया।

इंडियन जर्नल ऑफ सोशल वर्क, अस्तू 1993, पृष्ठ 536, खंड एल आई बी नं. 4, टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुंबई।

तिवारी एंड ए.पी. पांडे, बी ह्यूमन डेवलपमेंट एंड गवर्नमेंट एक्सपेंडीचर इन।

श्रीवास्तव एस.पी. (सं.) द डेवलपमेंट डिबेट, 1998, नई दिल्ली; रावत पब्लिकेशंस।